॥ अङ्गदर्पण ॥

अर्थात्

सैयद गुलाम नबी उपनाम रसलीन कवि
कृत नखसिख।

जिसे अत्यन्त परिश्रम से खोज और शोध कर
डुमरांव निवासी पण्डित नकछेदी तिवारी
उपनाम अजान कवि ने छपवाया।

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित किया गया।

१८०५ ईस्वी।

तीसरी बार १०००] [मूल्य ।)

भूमिका ।

प्यारे पाठकवृन्द !

आज कोटिश: धन्यवाद उस आशा पूरक दीनबन्धु जगदीश्वर को है कि जिस की असीम और अलभ्य कृपा से इस अपूर्व पुस्तक "अंगदर्पण" (सिखनख) को प्रकाश कर आप लोगों को न्यूनाधिक प्रसन्न करने में समर्थ हुआ हूं। कैसा आनन्द का विषय है कि "अमी हलाहल मद भरे" इस दोहे को पढ़ कर बिहारी सतसई का स्मरण करते थे, सो इस अपूर्व ग्रन्थ द्वारा यह भ्रम निवृत्त हुआ। धन्य है सैयद गुलाम नबी (रसलीन) को जो ऐसे उत्कृष्ट रत्न को प्रकाश कर सुयश के भागी हुए। मैं अन्त में श्री ३ पंडित वर विजयानन्द त्रिपाठी तथा [illegible] कृष्ण वर्म्मा सम्पादक भारतजीवन को [illegible] लौकिक कृपा की सराहना [illegible] पुस्तक को मेरे ऐसे मतिमन्द की इस अभिलाषा को पूर्ण कर आप लोगों का पुरस्कार किया है।

आप लोगों का कृपापात्र नकछेदी तिवारी

डुमरांव।

अथ अङ्गदर्पण ।

मङ्गलाचरण ।

राधापद बाधाहरन साधा करि रस-लीन ।
अंग अगाधा लखन को कीनो मुकुर नवीन ॥१॥
सो पावै या जगत में सरस नेह को भाय ।
जो तन मनतें तिलन लो बालन हाथ बिकाय २

बार वर्णन ।

मोर पच्छ जो सिर चढ़े बारन तें अधिकाय । सहस चखन लखि धनि कचन परे मान छिन पाय ॥३॥—बेनी बँधि इक ठौर ह्वै अहि सम राखत ठौर । बिथुरि चँवर से कच करत मन बिथोरि घर चौर ॥ ४ ॥—बेनीवर्णन—जो हरि रहे त्रिलोक में कालीनाथ कहाय । ते तुव बेनी के डँसे सब जग हँसे बनाय ॥५॥—भनतें न कैसे हूं बनै या बेनी की दाय । तुव पीछे जो जगत के पीछे परे बनाय ॥ ६ ॥—मैमर्द वर्णन

मानिक मनि ये नहिं जरे मैमद झबियन लाय। फनि तजि मनि पीछे परे तुव बेनी की आय॥७॥—मैमद झबियन मुकुत लखि यह आयो जिय लागि। ससि हित पीछे राहु की नखत रहै हैं लागि ॥८॥—जूरावर्णन—चन्दमुखी जूरो चितै चित लीनो पहचानि। सौस उठायो है तिमिर ससि की पीछे जानि ॥ ९ ॥ यों बांधति जूरो तिया पटियन को चिकनाय। पाग चिकनिया सीस की यातें रही लजाय ॥१०॥—पाटी युत मांग वर्णन—मांग लगी ते बधिक तिय पाटी टाटी ओट। दोऊ दृग पच्छीन को हनत एकही चोट ॥ ११ ॥—पाटी युत अरुन मांग वर्णन—लाल मांग पटिया नहीं मदन जगत को मार। असित फरी पै लै धरी रकत भरी तरवार ॥१२॥ भाल वर्णन—पाटी दुति जुत भाल पर राजि रही यहि साज। असित छत्र तमराज मनु धर्यो सीस द्विजराज ॥१३॥ वा रसाल को लाल किन देखत होहिं निहाल। जाहि भाल तकि बाल

सब कूटति हैं निज भाल ॥१४॥—जोरि सकत रसलीन तिहिं भाल साथ को हाथ। चन्द कलङ्की करि दियो बिधि सोहाग जिहिं माथ ॥१५ ढुरै मांग तें भाल लौं लर के मुकुत निहारि। सुधा बुंद मनु बाल ससि पूरत तम हिय फारि ॥१६॥—टीका बर्णन—बारन निकट ललाट यों सोहत टीका साथ। राहु गहत मनु चन्द पै राख्यो सुरपति हाथ ॥ १७ ॥—लाल बिन्दी वर्णन—लाल सु बिंदुलो भाल तकि जग जानी यह रीति। तेरे सीस प्रतीति कै बसी मौत की प्रीति ॥१८॥—पीत बिन्दी वर्णन—सोहत बेंदी पीत यों तिय लिलार अभिराम। मनु सुर-गुरु को जानि कै ससि दीनो सिर ठाम ॥ १९ ॥—स्वेत बिन्दी वर्णन—यहि विधि गोरे भाल पै बेंदी स्वेत लखाय। मनो अदेवन हित अमी लेत सुक्र ससि आय ॥ २० ॥—स्याम बिन्दी वर्णन— दई न बाल लिलार पर बेंदी स्याम सुधार। मांग स्यामता उरग लौं बैठ्यो कुण्डल मार ॥२१

आड़ वर्णन—तुव लिलार इन आड़ किय निज गुन विदित निदान। अड़ि राखत है आड़ह्वै आड़ २ जग प्रान ॥२२॥—खौर वर्णन—सूधी पटिया माग बिनु माथे केसर खौर। नेह कियो मनु मेघ तजि तड़ित चन्द सों दौर॥ २३ ॥—नारी केसर खौर यह प्यारी माथे माहँ। डारी दरपन भाल मधि सीस किनारी छांहँ॥२३॥—श्रवण वर्णन—सीप श्रवन या रमनि को कैसे होय समान। जा प्रसंग तजि मुकुतगन यामे बसे निदान ॥२५॥—मुकुतायुत श्रवण वर्णन—मुकुत भए घर खोइ कै बैठे कानन आय। अब घर खोवत और के कीजे कौन उपाय ॥ २६ ॥ तरौना वर्णन—जटित तरौना श्रवन में यह बिधि करत बिलास। पिता तरणि कीनी मनो पुत्र करन घर बास॥ २७ ॥ खुटिला वर्णन—ठग तस्कर श्रुति सिद्ध के लहत साधु परमान। ये खुटिला श्रुति * सिद्ध की खुटिला रहै निदान

* कान वेद।

॥२८॥ कर्णफूल वर्णन—करनफूल दुति धरन बिबि करन लसत इहि भाय। मनो बदन ससि के उदै नखत दुहूं दिसि आय ॥ २९॥ भौंह वर्णन—नाप २ चुपचाप ह्वै अतन छांप धनु आप। आप गहे भव चाप अब पस्यो जगत के पाप ॥ ३० ॥ तजि सिंहासन राज गरुडासन रंक विसेख । छुटे न आसन कौन की भौंह सरासन देख ॥ ३१ ॥ भौंह मरोर वर्णन—ऐंठेही उतरत धनुष यह अचरज को बान । ज्यों ज्यों ऐंठति भौं धनुष त्यों त्यों चढ़त निदान॥ ३२ ॥ पलक वर्णन—यों तारे तिय दृगन के सोहत पलकन साथ। मनो मदन हिय सीस विधु धरे लाज के हाथ ॥ ३३ ॥ बरुनी वर्णन—कारे अनियारे खरे कटकारे के भाव। झपकारे बरुनी करत झप २ कारे घाव ॥३४॥ नेत्र वर्णन—अमी हलाहल मदभरे स्वेत स्याम रतनार। जियत मरत झुकि २ परत जिहि चितवत इक बार॥ ३५ ॥ कारे कजरारे अमल पानिप टारे पैन।

मतवारे प्यारे चपल तुव ढुरवारे नैन ॥ ३६ ॥
तुरँग दौठि आगे धर्‌यो बरुनी दल के साथ।
तेरे चख मख के जगत कियो चहत हैं हाथ॥
३७॥ पूतरी वर्णन—तन सुवरन के कसत यों
लसत पूतरी स्याम। मनो नगीना फटिक में
जरी कसौटी काम ॥३८॥ जो रसलोन तियान
में रहै विचित्र कहाय। ते पाहन पुतरी भये
लखि तुव पुतरी भाय ॥ ३९ ॥ कोयन वर्णन—
कोयन सर जिनके करे सोय न राखि ठौर। को-
हून लोयन ना हनो कोयन लोयनजोर ॥ ४० ॥
काजर वर्णन—रे मन रीति विचित्र यह तिय
नैनन के चेत। विष काजर निज खाय के जिय
औरन के लेत ॥४१॥ दृग तारा तकि ज्यों लह्यो
दीपक जातक भाय। जग के घातक पाय के
लागत पातक धाय ॥४२॥ काजर कोर वर्णन—
तिय काजर कोरें बढ़ौ पूरन किय कवि पच्छ।
लखियत खंजन पच्छ की पुच्छ अलच्छ प्रतच्छ ४३
नेत्र डोरे वर्णन—अञ्जन गुन दौरत नहीं लो-

यन लाल तरङ्ग । कोरन पगि डोरन लगत तुव पोरन को रंग ॥४४॥ राते डोरन तें लसत चख चंचल दुहि भाय । मनु विधि पूनो अरुन में खञ्जन बांध्यो आय ॥४५॥ चितवन वर्णन—गहि दृग मीन प्रवीन की चितवनि बंसी चारु । भव-सागर में करत हैं नागर नरन सिकारु ॥ ४६ ॥ औचकही मो तन चितै दीठ खींच जब लीन । बिधन निसारन बान लौं दोऊ बिध दुख दीन ॥४७॥—कटाक्ष वर्णन—बान बेधि सब बधे को खोज करत हैं जाय । अद्भुत बान कटाक्ष जिहिं बध्यो लग्यो संग जाय ॥३८॥ तिरछी चितवन तें चखन चितवन कीनो दोय । लागत तिरछी तेग जय कटत बेग नहिं होय ॥४९॥—कपोल वर्णन मुकुर बिमलता चन्द दुति कंज मृदुलता पाय । जनम लिइ जो कंबु तें लहे कपोल सुभाय ॥५०॥ आयो समता बोल कहि लहि कपोल सुकुमार । मुकुर पर्‍यो तातें पर्‍यो मुकुर बदन में छार ॥५१ शीतला दाग वर्णन—दाग शीतला को नहीं

मृदुल कपोलन चारु। चिन्ह देखियत ईठ की परी दीठ के भार ॥ ५१ ॥ स्वेदकण वर्णन—
अमल कपोलन दृगन स्वेदकण लगत इहि रूप। मानो कंचन कंबु में मोती जड़े अनूप ॥ ५२ ॥
तिल वर्णन—जाल घुघट अस दंड भ्रू नैनन मुलह बनाय। खैंचति खग जग दृग तिया तिल दानो दिखराय ॥५३॥ सब जग पेरत तिलन को को न थकि इहि हेरि। तुव कपोल के एक तिल डाख्यो सब जग पेरि ॥ ५४ ॥ अलक वर्णन—
बाँध्यो अलकन प्रान तुव बाँधन कचन बनाय। छीटन के अपराध यह पख्यो बड़न पहँ जाय ॥५५ विधि कपोल के लटक तिय अदभुत गति यह कीन। ऐंचा खैंची डार के दोऊ विधि जिय लीन ॥ ५६ ॥ नासा वर्णन—नासा कंचन तरु भए मरकत पत्र पुनीत। पलक फूल दृग फल भए सुर तरु कामद मीत ॥ ५७ ॥ छाक २ तुव नाक सों यों पूछत सब गांव। किते निवासिन नासि के लह्यो नासिका नाव ॥ ५८ ॥—नासा

बेध वर्णन—नासा अतन तुनीर की तीर नहीं दरसाय। बेध उपर की सरन की सरलो बेधत जाय॥ ५९॥ नत्थ वर्णन—नथ मुकुतन में लालरी तकि जग लह्यो प्रकास। मुकुतन के संग नाक में रागी हिय को बास॥ ६०॥ नत्थ मुकुत अरु लालरी सत गुन रज गुन रंग। प्रगट कहां ते करत यह सकल तमोगुन ढंग॥ ६१॥ लटकन वर्णन—ठग लटकन नथ फांस ले पाय नासिका साथ। मारि मरीखो जगत इन नट २ डोले हाथ॥ ६२॥—पनारी वर्णन—ललित पनारी कलित यों लसत अधर सुकुमार। मनुईवी भासत पर्‌यो चिन्ह आंगुरी भार॥६३॥—अधर वर्णन—लिखन चहत रसलोन जब तब अधरन को बात। लिखनि * को विधि जीभ बँधि मधुराई तें जात॥६४॥ जोभा अधरन तरुनि के सोभा धरत न कोय। याही विधि इनकी पर्‌यो नाम अंधर बिधि जोय॥६५॥ तेरस दुतिया दुहुन मि-

* लेखनि—कलम।

लि एक रूप निज ठानि। भोर सांझ गहि अरु-नई भए अधर तुव आनि ॥६६॥ लाल बाल के अधर ढिग लाल बात जनि चाल। लाल बात सुनि श्रुति सुकुत करत बात में लाल। तमोल वर्णन—तरुनी अधरन अरुन पर यों रँग धरत तमोल। ज्यों रंग जैठो कुसुम को राजत लाल निचोल ॥ ६८ ॥ चीन्हों रंग तमोल को दीन्हों अधरन बाल। कीन्हों बिद्रुम सुरँग पै मानो मौनो लाल ॥ ६९ ॥ दसन वर्णन—लाल चलत जिहि ठौर वा बाल दसन को बात। श्र-वन सुनत ही सोप लों मुकुतन तें भरि जात ॥ ७०॥ मोल लेन को जगत जिय विधि जौहरी प्रवीन। राखे विद्रुम के डबा लै द्विज मुकुत नवीन ॥ ७१ ॥ अरुन दसन वर्णन—दसन झ-लक में अरुनता लखि आवत मन मांह। परी रदन पर आय कै अधर रंग की छांह ॥ ७२ ॥ अरुन दसन तुव बदन लहि को नहिं करे प्र-कास। मंगल सुत आए पढ़न विद्या बानी पास

॥७३॥ स्याम दसन वर्णन—स्याम दसन अधरान मधि सोहत हैं इहि भांति। कमल बीच बैठी मनो अलि छवनन की पांति ॥ ७४ ॥ मुसुकान वर्णन—अधरन बसि मुसुकान तुव तजि पर-कीर्ति निदान। ज्यों कृपान अमृत धरे तऊ मारि है प्रान ॥ ७५ ॥ बिज्जुरि बीज रदनन जमे अमी बदन में आनि। याही तें दामिनि भई कामिनि की मुसुकानि ॥७६॥ सुदती के मुसु-कात यों अधरन आभा होति। मानहु मानिक पै परी आय दामिनी जोति ॥७७॥ हास वर्णन॥ ललन कपट सौतिन गरब हास कियो सब नास चन्द्रहास सम भासई चन्दमुखी को हास ॥७८॥ दन्त कथा वा दसन की अवर कही नहिं जात। फूलझरी सी छुटत जब हंसि २ बोलति बात ॥ ७६ ॥ रसना वर्णन—नाम सप्तसुर सिंधु को ब-चन मुक्ति को सौप । के रसना सब रसन कों पोथी गिरा समीप ॥८०। बाणी वर्णन—अद-भुत रानी परत तुव मधुबानी श्रुति माहिं ।

सब ज्ञानी ठहरे रहैं पानी मांगत नाहिं ॥८१॥
मुखबास वर्णन—अगर अतर के नगर में कहूं रही नहिं चाह। बगर २ सब डगर में तुव मुख बास प्रवाह ॥ ८२ ॥ नथ मुकुतन के झलक में मो मन लह्यो प्रकास। करत नाकवासी मुकुत आसु तिया मुख बास ॥ ८४ ॥ चिबुक वर्णन—आए ठोढ़ी सर करन ववरे अम्ब निदान। कोई जर कोइर भए कोइ मुख पाक पिरान ॥ ८४ ॥ चिबुक गाड़ वर्णन—मन पारा दृग कूप तें उफन बाल मुख छांह। पर्‍यो चिबुक की गाड़ में कबहूं निकरत नांह ॥ ८५ ॥ अम्भ भवन जल में धसी जो हरि केलि निधान। तौय चिबुक तिल की परी लागी चुबकौ खान। ८६ ॥ होम कुण्ड तुव नाभि पर घूम रोम कौ रेख। ताहि कालिमा देखि के चिबुक माह तिल भेख ॥ ८७॥ मुखमण्डल वर्णन—नैन छकी अतिही लखे तिय तुव बदन उदोत। याकी दीपत दीपहीं फूंक मुकुर मुख होत ॥८८॥ कावन जोति नैनन लगी

वा सुन्दरि मुख तूल । या दीपत में होत है चन्द चांदनी फूल ॥ ८९ नहिं मृगंक भू अङ्क यह नहिं कलंक रजनीस । तुव मुख लखि हारो कियो घसि २ कारो सीस ॥ ९० ॥ चन्द नहीं यह बालमुख साभा देखन काज । बारी कारो रैन में महताबी द्विजराज ॥ ९१ ॥ बसनयुत मुख वर्णन—इहिं बिधि गोरे बदन पर लसत डोरिया सेत । मनो लहरि लों सरद घन ससि पर सोभा देत ॥ ९२ ॥ रंग लहरिया चीर में गोरें मुख को देख । मानो कला अशेष ससि बैठो है परवेख ॥ ९३ ॥—किनारी वर्णन—स-किनारी सारी चितै सबन बिचारी बात । गात रूप पर बाल की जातरूप वलि जात ॥ ९४ ॥ ग्रीवा वर्णन—जब धरतीक कपोत सब नटे देखि ग्रिव भेख । तब उन पापिन कण्ठ बिधि दियो पाप की रेख ॥ ९५ ॥ दरपन सिवा कण्ठ सम कंचन दुति किमि होत । दुलरो जाकि लगत ही जोति चौलरी होत ॥ ९६ ॥ कण्ठ चय

रेखा वर्णन—जब मोहि तिहुलोक सब तिह्न ग्राम लै ठोक। तब दीने तुव कंठ बिधि ये त्रय मोहन लोक। ९७॥—चौलरी वर्णन—कंबु कंठ पर धरत यों कनक चौलरी जोति। चतुर माल जनु दीप की डगमग २ होति॥ ९८॥ चंपकली वर्णन—मोती जड़ित चँपाकली तरे ढरे बहु गूंद। सहस किरन रवि तें मनो चुवत सुधा को बूंद॥९९॥ चौकी वर्णन—लाल चुनी में हरित नग यों उरबसी सोहाय। मानो इन्दु बधून में इन्द्रपुत्र दरसाय॥१००॥ हार वर्णन। अदभुत मय सब जगत यह अदभुत जुगत नि-हार। हार बाल गर परतहीं पर्यो लाल गर हार॥ १०१॥ हार सितासित नगन के लखि मन पायो ऐन। पर्यो मैंन के चैन तें गरे इन्दु के नैन॥ १०२॥ हमेल वर्णन—निज गुन जंत्र दिखाय के तिय हमेल हिय पाय। कलिजुग साधन रीति गल डारत जील बनाय॥ १०३॥ बाँह वर्णन—चलत हलत नित बाँह तुव देत

कोटि जिय दान । याहा तें सब कहत हैं सुधा लहर परिमान ॥ १०४ ॥ सुधा लहर तुव बांह के कैसे होत समान । वा चखि पैयत प्रान को या लखि पैयत प्रान ॥ १०५ ॥ कित दिखाइ कामिनि दई दामिनि को यह बाँह । तरफरात सी तन फिरै फरफरात घन माँह ॥१०६॥ छाई चख भाई हिया ल्याई चित को चाय । भाई २ भजन पै भाई क्यों न लुभाय ॥१०७॥—पहुंची वर्णन—लालन के मन हगन को रही चोप यह आन । पहुंचो बन पहुंचो कहूं प्यारो के पहुंचान ॥ १०८ ॥ अँगुरा दिपति मरीचिका चन्द हथेरिन साथ । तम सौतिन जन टलि पिय जिय चकोर किय हाथ ।.१०९॥—कर अँगुरी वर्णन—मोहन सौवन बसि करन उनमादन उचटाय । मदन सरन गुन तकनि के अँगुरिन लयो किनाय ॥११०॥ अँगुरी पोर वर्णन—तिय प्रति इँगुरिन फलन में चय २ पोर सुहाय । तीन लोक बसकरन को बीज बये हैं आय ॥१११

नख युत अँगुरी वर्णन—यों अँगुरी तिय करन की लागत नखन समेत। औषधीश गुन अमिय मनु जीवन मूरिन देत ॥११२॥—मेंहँदी वर्णन बारह मंगल राशि गुन सोई मिलि सब आय। उभय हथेरिन दस नखन मेंहँदी भई बनाय॥ ११३॥ दिप्त हथेरिन की दिपत यों मेंहदी के संग। लाली सावन खांझ में ज्यौं सूरज की रंग ॥११४॥ यो मेंहँदी रँग में लसत नखन झलक रसलीन। मानो लाल चुनीन तर दीनों डाक नवीन ॥११५॥—वाजूवन्द वर्णन। सुबरन वाजू-वन्द जुत बांह लसत दुहिं भाय। मनु दामिनि पै चाह के नखत बसे हैं आय ॥११६॥ यों भुज-बँद की छवि लसो भाविय न फन घोर। मानो झूमत हैं छके अमी कमल तर भौंर ॥ ११७॥ टार वर्णन—बसुधा में भुज टार की उपमा बुधा न चित। बाल सुधाकर कुधाधर सुधा ल-हर सी लेत॥११८॥—चूरी वर्णन—रंग विरँग चूरी नहीं लखि रवि कंकन भेख। हरि सन

बिनय बखी मनो कर परसन पर बेखु ॥ ११९ ॥ गजरा वर्णन—तुव गज जनै के फूँदना मनिगन की दुति पाय। चित चोरत हैं जगत को अनगन दीप जराय ॥१२०॥--आरसी वर्णन। जड़ित आरसी कीर्तिका सोहत अँगठा साथ। छलि नखत जो अवरतें छलि बने हैं हाथ ॥ १२१ ॥—आरसी मुख छाँह वर्णन। मुकुत जड़ी बर आरसी तामें मुख की छाँह। यो लागत मानो ससी उड़गन मंडल माँह॥ १२२ ॥ गात वर्णन सकुचत चंपा गात लखि संपा नहिं ठहराय। याको तन कंपा भयो झंपा गगन बनाय ॥१२३॥ तरुनि बरन सर करन को जग सें कवन उदोत। सुबरन जाकि अंग ढिग राखत कुबरन होत॥१२४॥ देह दीप्ति छवि गेह की किहिं विधि बरनी जाय। जा लखि चपला गगन तें छिति पटकत निज आय। १२५॥—सुकुमारता वर्णन—क्यों वा तन सुकुमारतनि देखन पैयत नोठि। दीठि परत यों तरफरति मानो लागी दीठि ॥१२६॥

लगत बात ताको कहा जाको सूक्ष्म गात। नेक स्वास के लगतही पास नहीं ठहरात ॥१२७॥ अंगवास वर्णन—नैन रंग तें सुख लहत नासा बास तरंग। सोनो और सुगन्ध ह्वै बाल सलोनो अंग ॥१२८॥ इत उत जान न देत छिन फाँसि लेत निज पास। मीन नासिका जगत की बंसी चढ़ै तुव बास ॥१२९॥ कुच वर्णन—उठि जोबन में तुव कुचन मो मन मारयो धाय। एक पंथ दुइ ठगन तें कैसे के बचि जाय ॥१३०॥ कठिन उठाये सीस इन उरजन जोबन साथ। हाथ लगाये सबन को लगे न काहू हाथ ॥१३१॥ निरखि २ वा कुचन गति चकित होत को नाहिं। नारी उर तें निकरि के पैठत नर उर माहिं ॥१३२॥ कुच स्यामता वर्णन—गोरे उर जन स्यामता इगन लगत यह रूप। मानो कंचन घट धरे मरकत कलस अनूप ॥ १३३ ॥ रोमावली कुच स्यामता वर्णन—रोमावलि कुच स्यामता लखि मन लह्यो बिचार। समर भूप

उर सीस पर धरी फरी समरार ॥ १३४ ॥ स्वेत कंचुकी वर्णन—कनक बरन तुव कुचन की अरुन अगर के संग। धरत कंचुकी स्वेत में बनै फूल को रंग ॥ १२५ ॥ नील कंचुकी वर्णन— नील कंचुकी में लसत यों तिय कुच की छाँह। मानो केसर रँग भरे मरकत सीसी माँह ॥ १३६ अरुण कंचुकी वर्णन—बिधुबदनी तुव कुचन की पाय कनक सी जाति। रँगी सुरंगी कंचुकी नारंगी सी होति ॥ १३७ ॥ हरित कंचुकी वर्णन। हरित चिकन की कंचुकी पाय कुचन के थान। हरित हराई तें हिया बूढ़न लूटत प्रान ॥ १३८ ॥ पीत कंचुकी वर्णन—पीतांगी पर यों रही बिन्दी कनक सुहाय। मानो कंचन कलस पै लैससि कीन्हों लाय ॥ १३९ ॥ कंचुकी जाली वर्णन— जाली अँगिया बीच यों चमक कुचन की होति। झंझरी के तुम्बन लसे ज्यों दीपक की जो.त ॥ १४० ॥ रोमावली वर्णन। रोमावलि रमलीन वा उदर लसति इहिं भाँति। सुधा कुंभ कुच हित

चली मनो पिपिलिका पाँति ॥ १४१ ॥ अमल उदर वा सुघर पै रोमावलि को पेख । प्रगट देखियत स्याम को अवा गवन को रेख ॥१४२॥ नाभीयुत उर त्रिवली वर्णन—मो मन मंजन को गयो उदर रूप सरधाय । पर्यो सु त्रिवली भँवर तें नाभी भँवर मझाय ॥ १४३ ॥ एक बली के जोर तें जग में बास न होय । तुव त्रिवली के जोर तें कैसे बचि है कोय ॥१४४॥ उदर बीच मन जाय के बूड्यो नाभी माहिं । कूप सरोवर के परे कोऊ निकसत नाहिं ॥ १४५ ॥

नाभी अन्तर वर्णन ।

मधुप मनोरथ नाभि तर निकट जात यह राय । यातें चंपकली भली अली हिये ठहराय ॥ १४६ ॥—नीवी वर्णन—सोहत नीवी नाभि पर उपमा कहै न कौन । मनो अतनसिर पुहुप धरि बैठे अपनी भौंन ॥ १४७ ॥ निरखत नीवी पीत को पल न रहत है चैन । नाभी सरसिज कोस के भौंर भए हैं नैन ॥ १४८ ॥ उदर कि-

किनी वर्णन—उदर सुधा सर चंद पै लसत कमल को पाँति। ता पाछे किंकिनि परी कनक भँवर की पाँति॥ १४९॥ पीठ वर्णन—इक तरु दुइ दल होत हैं यह अचरज की बात। दुइ तरु कदली जंघमै पीठ एकही पात॥ १५०॥ जोरि रूप सुबरन रचौ विधि रचि पचि तुव पीठ। कीन्हीं रखवारौ तहाँ व्याली बेनी दीठ॥१५१॥ पीठ पनारी वर्णन—नहीं पनारी पीठ तुव कीन्हीं दीठ बिचार। धंसकि गई यह भारतें बेनी के सुकुमार॥ १५२॥ कटि वर्णन—सुनियत कटि सुच्छम निपट निकट न देखत नैन। देह भए यों जानिये ज्यों रसना में बैन॥ १५३॥ सूछम कटि वा बाल की कहौं कवन परकार। जाके ओर चितौतहीं परत द्दगन में बार॥१५४॥ सत्या सीता हरि करी जगत् आपने रंग। रमनि लंक गढ़बङ्क गहि रावन भयो अनंग॥ १५५॥ नितंब वर्णन—सुबरन सुकृत नितंब जुग यों सोहत अभिराम। मनु रति रणजीते धरे उलटि

नगारे काम ॥ १५६ ॥ वा नितंब जुग जंघ की उपमा की यह सार। मानो कनक तमूर दोउ उलटि धरे करतार ॥ १५७ ॥ जंघ वर्णन—सीम जटा धरि मौन गहि खड़े रहै इक पाय। ये तो पत की दिल तऊ लहै न जंघ सुभाय ॥ १५८ गोरि ढोरि जंघ तुव बोरे सुवरन माहँ। कोरि निहोरे नाह पै गए निहोरे नाहँ ॥ १५९ ॥ ऊरू वर्णन—प्यारे उरू तकि २ दिपति अंबर में न समाय। दीप सिखा फानूस लों न्यारे झलकत आय ॥ १६० ॥ पद वर्णन—तुव पद सम तन पदुम को कह्यो कवन विधि जाय। जिन राख्यो निज सीस पर तुव पद को पद लाय ॥ १६१ ॥ पद लाली वर्णन—लिखन चहौं मसि बोरि जब अरुनाई तुव पाय। तब लेखनि के सीस कै ईंगुर रँग ह्वै जाय ॥ १६२ । एड़ी वर्णन—जो हरि जग मोहित करी सो हरि परे बेहाल। कोहर सौ एड़ीन सों को हरि लियो न बाल ॥ १६३ ॥ पदतल वर्णन—तुव पगतल मृदुता

चितै कवि वरनत सकुचाहिं। मन में आवत जीभ लौं मत छाले परि जाहिं ॥ १६४ ॥ पद अँगुरी वर्णन—रद कीनो तुव जुगल पद सब मद्द जीवन मूरि। दसन दशा दस दिसन को करि दस अँगुरिन दूरि ॥ १६५ ॥ पदनख वर्णन द्युति वा उद्दित नखन की भनै कवन कविईस। पाय परत छिति जाहि कै भयो चंद पिय सीस ॥ १६६ ॥ जावक वर्णन—मन भावक जावक सखिन सौतिन पावक ज्वाल। सीस नवावक लाल को तुव पद जावक थाल ॥ १६७ । चूरा वर्णन—गुँजरी चूरा कनक तुव ऐसी बनी सुहाय। मनु ससि रवि निज रंग कर ल्याए पूजन पाय ॥ १६८ ॥ नूपुर वर्णन—अम्बुज पद भू पर धरत नूपुर नहिं बाजंत। साधुन के मन भौंर ह्वै बाँधत रच्छा जंत ॥ १६९ ॥ पायल वर्णन। पायन पायल के परत झनकायल धुनि कान। मायल कर घायल करत कुरझायल ज्यों तान ॥ १७० ॥ अनवट वर्णन—सुवरन अनवट चरन

को बरन करत यह मूल। नवल कमल पर बि-
मल मनु सोहत गेंदा फूल ॥ १७१ ॥ चोट करे
नहिं जात है कोहूं इनकी चोट । बिधि याही
बिधि तें धर्यो इन को नाम अनोट ॥१७२॥ का-
लस सात बिछियान की बिधि अति सुबुध बनाय।
सप्त द्वीप राजान के मुकुट धरे तुव पाय ॥१७३॥
सम्पूर्ण नायिका वर्णन—नवला अमला कमल
सी चपला सी चल चारु। चन्द्रकला सी सीत
कर कमला सी सुकुमारु ॥ १७४ ॥ मुख छवि
निरखि चकोर अरु तन पानिप लखि मीन। पद
पंकज देखत भँवर होत नयन रसलीन ॥१७५॥
हाव भाव वर्णन—हाव भाव प्रति अंग लखि
छबि की छलकान संग। भूलत ज्ञान तरंग सब
ज्यों कुरछाल कुरंग ॥ १७६ ॥ वसन वर्णन—
लाल पीत सित स्याम पट जो पहिरत दिनरात।
ललित गात छवि छाय के नैनन में चुभि जात
॥ १७७ ॥ सिख नख पूर्णता वर्णन—ब्रज बानी
सीखन रची यह रसलीन रसाल। गुन सुबरन